पाठ - 6
मूसा और व्यवस्था

I पाठ-संबंधी विचार

1. निर्गमन 19:1-8 - इस्राएली परमेश्वर की वाचा को पूरा करने और पवित्र लोग बनने के लिए मान गए।
2. निर्गमन 19:9-25 - परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर अपनी उपस्थिति प्रकट की।
3. निर्गमन 20:1-17- परमेश्वर ने मूसा के साथ बात की और उसे व्यवस्था दी।

II विषय-वस्तु:

परमेश्वर ने स्वयं को इस्राएल के लोगों पर प्रकट किया और उनके साथ एक वाचा बांधी कि वे, पृथ्वी की सभी जातियों से अलग रहकर पवित्र बनें। जो व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई वह पत्थर की पट्टियों पर लिखी गई आज्ञाएं थीं जो इस्राएलियों के लिए परमेश्वर के सामने पवित्र रहने के लिए अनिवार्य थीं। आराधना के तम्बू वाले स्थान से परमेश्वर ने उन लोगों में विशेष प्रकार से अपनी उपस्थिति को प्रकट करना था, और वहीं पर परमेश्वर के लिए बलिदान और भेंटें चढ़ाई जानी थीं।

1. परमेश्वर स्वयं को अपने लोगों पर प्रकट करता है:

क) बादल में और आग के खम्भे में - निर्गमन 13:17-22.

ख) आकाश से भोजन बरसाकर - निर्गमन 16:4-6,27-35.

ग) अपनी सामर्थ और महिमा को सीनै पर्वत पर दिखाकर - निर्गमन 19:16-20.

घ) मूसा के द्वारा जिसने परमेश्वर से व्यवस्था पाई- निर्गमन 24:9-18; 31:18.

2. परमेश्वर ने मूसा के द्वारा व्यवस्था दी:

क) यह व्यवस्था पत्थर की पट्टियों पर लिखी हुई थी- निर्गमन 24:12; 32:16; 35:27-28.

ख) मूसा ने इसे एक किताब में लिख लिया- निर्गमन 24:3-8.

ग) यह प्रशंसा के योग्य है- भजन 119:1-6; रोमियों 7:7-13.

घ) यह उन्हें धर्मी बनाती है, जो इसका पालन करते हैं- व्यवस्थाविवरण 6:24-25; रोमियों 2:13.

3. इस्राएली परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करने में नाकाम रहे।

क) इस्राएली बार-बार शिकायत करते थे- निर्गमन 15:22-16:20; 1 कुरिन्थियों 10:5-11.

ख) जब मूसा सीनै पहाड़ पर था तो इस्राएलियों ने मूर्तिपूजा की- निर्गमन 32.

ग) यहोशू और कालेब को छोड़ उस पीढ़ी के सभी लोग जंगल में ही मर गए- गिनती 26:63-65.

4. परमेश्वर अपने लोगों के साथ था।

क) डेरे में - निर्गमन 25:8-22; 40:34-38.

ख) अपने लोगों के द्वारा अपनी शक्ति दिखाने के लिए- व्यवस्थाविवरण 4:1-14,24-40

ग) अपने प्रेम तथा अपनी प्रतिज्ञाओं के कारण- व्यवस्थाविवरण 4:37-40; रोमियों 9:4-5.

III व्यावहारिक प्रासंगिकताएं:

1. हम उस समय के बारे में जानते हैं जब इस्राएली व्यवस्था के अधीन थे और लोग धर्मी ठहरने के लिए, व्यवस्था को पूरा करने के लिए अपनी योग्यताओं पर निर्भर थे तो क्या होता था- रोमियों 3:19-20; 7:7-14; गलतियों 3:10-14.
2. व्यवस्था हमें मसीह तक पहुंचाने के लिए एक शिक्षक का काम करती थी- गलतियों 3:19-29; कुलुस्सियों 2:11-17.
3. मसीह की व्यवस्था मूसा की व्यवस्था से भिन्न वाचा है- यिर्मयाह 31:31-34; कुलुस्सियों 2:20-23; गलतियों 4:1-7; रोमियों 8:1-4.
4. हमारी धार्मिकता मसीह यीशु पर विश्वास के कारण होनी चाहिए- रोमियों 4:14-25; फिलिप्पियों 3:8-14.
5. सच्चा विश्वास हमेशा आज्ञाकारिता को जन्म देता है- रोमियों 6:17; याकूब 2:14-26; फिलिप्पियों 2:14-15.

IV याद करने के लिए आयत :

व्यवस्थाविवरण 4:39-40 - ''सो आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मानना, इसलिए कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे दिन बहुत बरन सदा के लिए हों।''